

व्यावहारिक क्षेत्रों में किया जाने वाला विज्ञान के अन्वेषणों का तकनीकी उपयोग या प्रयोग।

**अनुप्रयोग** पुं. (तत्.) किसी सिद्धांत को व्यवहार में लाना। application

**अनुप्रयोग-परिधि** स्त्री. (तत्.) भाषा. भाषा के व्यावहारिक क्षेत्र में किसी शब्द के प्रयोग होने की परिधि या सीमा जैसे- मजदूरी और वेतन की अनुप्रयोग परिधि में अंतर है।

**अनुप्रयोजन** पुं. (तत्.) किसी विषय, वस्तु सिद्धांत आदि के अनुप्रयोग करने की क्रिया या भाव, अनुप्रयोग।

**अनुप्रयोज्य** वि. (तत्.) जिसका समुचित प्रयोग किया जा सके, जिसका प्रयोग करना अपेक्षित हो applicable

**अनुप्रवाह** पुं. (तत्.) [अनु+प्रवाह] किसी नदी के बहने की दिशा।

**अनुप्रवेश** पुं. (तत्.) 1. द्वार से होकर किसी गृह में प्रवेश करना 2. अपने कुशल गुण/ व्यवहार से किसी के मन में अपना स्थान बनाना 3. किसी के हृदय में अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व का प्रवेश होना

**अनुप्रश्न** पुं. (तत्.) किसी व्याख्या या भाषण की समाप्ति पर उसके विषय से संबंधित पूछा जानेवाला प्रश्न।

**अनुप्रसादन** पुं. (तत्.) [अनु+प्रसादन] रुष्ट हुए व्यक्ति को प्रसन्न करना, किसी को मनाने का व्यवहार।

**अनुप्रस्थ** वि. (तत्.) जो चौड़ाई के बल हो, आड़ा, तिर्यक्।

**अनुप्रस्थ काट** स्त्री. (तत्.) 1. किसी वस्तु को अनुप्रस्थ के रूप में काटना 1. किसी वस्तु को सीधे (नब्बे अंश के कोण में)/तिरछे/बेड़ा (ऊपर-मध्य से काटने की प्रक्रिया) तिरछी काट, बेड़ी काट।

**अनुप्रस्थ तरंग** पुं. (तत्.) भौ. वह तरंग जिसमें माध्यम के प्रत्येक कण के विस्थापन की दिशा तरंग-संचरण की दिशा में समकोणिक होती है।

**अनुप्रस्थ परिच्छेद** पुं. (तत्.) गणि. वह काट जो अक्ष पर लंबवत् होती है।

**अनुप्रस्थ रेखा** स्त्री. (तत्.) [गणित] वह रेखा जो अन्य रेखाओं को तिरछी या आड़ी काटती है, तिर्यक् रेखा।

**अनुप्राणन** पुं. (तत्.) 1. प्राण संचार करना, निर्जीव विषय को ललित कलाओं द्वारा सजीव रूप में प्रस्तुत करना animation 2. उत्साह से भरना।

**अनुप्राणित** वि. (तत्.) 1. जिसमें प्राणों को स्फूर्त किया गया हो 2. जिसके निराश जीवन को उत्साह, प्रेरणा द्वारा संचारित किया गया हो 3. प्राण युक्त, जीवंत, जीवनशक्ति से युक्त जैसे- समाज को अनुप्राणित करने वाला साहित्य।

**अनुप्राप्त** वि. (तत्.) 1. जो बाद में प्राप्त हुआ हो 2. इकट्ठा किया हुआ।

**अनुप्राप्ति** स्त्री. (तत्.) 1. लाभ 2. पहुँच।

**अनुप्राप्य** वि. (तत्.) जो प्राप्त होने को हो या किया जा सके, इकट्ठा करने योग्य।

**अनुप्राशन** पुं. (तत्.) उपवास के बाद का भोजन।

**अनुप्रास** पुं. (तत्.) वह अलंकार जिसमें एक वर्ण की बार बार आवृत्ति होती है, वर्णसाम्य, वर्णमैत्री उदा. "तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए" में 'ता' का अनुप्रास।

**अनुप्रेक्षा** पुं. (तत्.) [अनु+प्रेक्षा] जैन. 1. किसी सैद्धांतिक या दार्शनिक बात का मन में बार-बार चिंतन या विचार 2. मन में किसी ज्ञात अर्थ का सतत अभ्यास 3. दार्शनिक चिंतन का एक रूप।

**अनुबंध** पुं. (तत्.) 1. किसी विषय पर, दो पक्षों के बीच होने वाला समझौता 2. करार, इकरारनामा, शर्तनामा 3. बंधन, लगाव 4. परिशिष्ट।

**अनुबंध चतुष्टय** पुं. (तत्.) भा.दर्श. 1. वेदांतसार में ग्रंथ के प्रारंभ में उल्लिखित चार अनुबंध, जैसे- ग्रंथ का प्रयोजन, विषय, अधिकारी और